जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी
जय अम्बे गौरी,
मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिि ध्यावत,
हरर ब्रह्मा शशवरी ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

मांग स ाेंदूर विराजत,
टीको मृगमद को ।
उज्जज्जिल े दोउ नैना,
चांद्रिदन नीको ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

किक समाि कलेवर,
रक्ताम्बर राजै ।
रक्तपुष्प गल माला,
कंठि पर साजै ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

केहरर ि ाहन राजत,
खड्ग खप्पर धारी ।
ुर-नर-मुननजन े ित,
नतनकेदुखहारी ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

काि ि कुण्डल शोशित,
ि ासाग्रे मोती ।
कोदिक चंद्र दिवाकर,
सम राजत ज्योती ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

शुांभ-ननशुांभ बबदारे,
महहषा ुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना,

ननशहदन मदमाती ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

चण्ड-मुण्ड संहारे,
शोणित बीज हरे ।
मधु-कैिि िोउ मारे,
सुर ियहीि करे ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

ब्रह्माणी, रूद्राणी,
तुम कमला रानी ।
आगम ननगम बखानी,
तुम सशि पटरानी ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

चौंसठ योगगिी मंगल गावत,
िृत्य करत िैरों ।
बाजत ताल मृिंगा,
अरू बाजत डमरू ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

तुम ही जग की माता,
तुम ही हो भरता,
भक्तन की दुख हरता ।
ुख ांपनत करता ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

िुजा चार अनत शोशित,
वर मुद्रा धारी ।

मिवांनित फल पावत,
सेवत िर िारी ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

कांचन थाल विराजत,
अगर कपूर बाती ।
श्रीमालकेतु में राजत,

कोहट रतन ज्जयोती ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

श्री अंबेजी की आरनत,
जो कोइ िर गावे ।
कहत शशवाि ंि स्वामी,
सुख-संपनत पावे ॥

ॐ जय अम्बे गौरी..॥

जय अम्बे गौरी,
मैया जय श्यामा गौरी ।